

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का नामकरण दादा भाई नौरोजी ने किया। अंग्रेजों ने इसकी स्थापना अपने लिए एक सुरक्षा वाल्व के रूप में की थी। इसका पहला अधिवेशन 1885 मुम्बई में हुआ।

कांग्रेस का अधिवेशन

(1)	1885	—	बम्बई	—	W.C. बनर्जी	—	72 सदस्य
(2)	1886	—	कलकत्ता	—	दादा भाई	—	3 बार अध्यक्ष
(3)	1887	—	मद्रास	—	तैयब	—	1 st Muslim
(4)	1888	—	इलाहाबाद	—	युल	—	अंग्रेज
(5)	1889	—	बम्बई	—	वेडरवन्	—	2 बार
(6)	1896	—	कलकत्ता	—	सयानी	—	वन्दे मातरम्
(7)	1905	—	बनारस	—	गोखले	—	स्वदेशी आंदोलन
(8)	1906	—	कलकत्ता	—	दादा	—	स्वराज
(9)	1907	—	सुरत	—	रास बिहारी	—	विभाजन (गरम दल, नरम दल)
(10)	1911	—	कलकत्ता	—	विशन नरायण	—	जन-गण-मन
(11)	1916	—	लखनऊ	—	A.C. मजूमदार	—	संयुक्त
(12)	1917	—	कलकत्ता	—	ऐनी बेसेंट	—	महिला
(13)	1918	—	बम्बई	—	हसन इमाम	—	कांग्रे का द्वितीय विभाजन
(14)	1920	—	नागपुर	—	राघवाचारी	—	कांग्रेस का संविधान पारित
(15)	1922	—	गया	—	CR दास	—	स्वराज पार्टी
(16)	1923	—	दिल्ली	—	अबूल कलाम	—	सबसे यूवा
(17)	1924	—	बेलग्राम	—	गांधी	—	
(18)	1925	—	कानपुर	—	सरोजनी नारूडु	—	पहली भारतीय महिला
(19)	1926	—	गूवाहाटी	—	श्री निवास	—	खादी वस्त्र अनिवार्य
(20)	1929	—	लाहौर	—	नेहरू	—	पूर्ण स्वराज
(21)	1931	—	करांची	—	पटेल	—	मुल अधिकार
(22)	1937	—	फैजपुर	—	नेहरू	—	गांव
(23)	1938	—	गुजरात हरिपुर	—	सुभाषचंद्र बोस	—	राष्ट्रीय योजना समिति
(24)	1939	—	MP त्रिपुरी	—	सुभाषचंद्र बोस× राजेन्द्र प्रसाद	—	पतामी सिता रमैया
(25)	1940	—	रामगढ़	—	अबुल कलाम आजाद	—	सबसे लम्बा 1946 तक
(26)	1946	—	मेरठ	—	कृपलानी	—	आजादी

स्वतंत्रता के बाद 1969 में कांग्रेस में विभाजन हो गया।

कामराज के नेतृत्व में कांग्रेस O = Old तथा इंदिरा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस R

चुनाव में कांग्रेस R की जीत हो गयी तथा कांग्रेस O अस्तित्वविहीन हो गई।

कांग्रेस के स्थापना से पूर्व भारत में बने संगठन :

1. लैंड होल्डर सोसाइटी (1838)	= कलकत्ता – द्वारकानाथ
2. बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी (1843)	= कलकत्ता – जार्ज थामसम
3. ब्रिटिश इंडिया एशोसिएशन (1851)	= कोलकत्ता – राधाकान्त देव
4. बम्बे एशोसिएशन (1852)	= दादाभाई नौरोजी
5. इस्ट इंडिया एशोसिएशन (1866)	= लंदन – दादा भाई नौरोजी
6. पुर्नसार्वजनिक सभा (1870)	= M.J. रनाडे
7. इंडियन लिग (1875)	= कलकत्ता – शिशिर कुमार घोष
8. इंडियन नेशनल एशोसिएशन (1876)	= कलकत्ता – सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, आनंद मोहन बोस
9. मद्रास महाजनसभा (1884)	= सुब्रमनियम अय्यर

भूमि सुधार कानून :

अंग्रेजों ने स्वयं का लाभ का ध्यान रखते हुए कानून बनाए थे।

स्थायी बंदोबस्त – इसे लार्ड कार्नवालिस ने 1793 में लाया। यह बिहार बंगाल, उड़ीसा, U.P., कर्नाटक में लागू था। यह भारत के 19% क्षेत्र पर लागू था। इसमें जमीन का मालिकाना हक जमींदार को दे दिया गया। अंग्रेज जितना कर को निर्धारित करते थे, उस कर के 11 में से 10 भाग (10/11) अंग्रेज ले लेते थे। जबकि, 11 में से 1 भाग (1/11) जमींदार रखते थे। जमींदारों को सूर्यास्त से पहले हिसाब चुका देना होता था। अतः इसे सूर्यास्त कानून भी कहते हैं।

रैयतवाड़ी – इसे टामस मुनरो ने 1820 में लाया। यह मुम्बई मद्रास तथा असम में लागू था। यह भारत के कुल क्षेत्र का 51% क्षेत्र पर लागू था। इसने जमीन का मालिकाना हक किसानों का था। किसानों को अपनी उपज का 35 से 55% तक Tax के रूप में देना पड़ता था।

महालवाड़ी व्यवस्था – इसे विलियम बैंटिक ने 1833 में लाया। यह पंजाब, U.P. मध्यप्रदेश में लागू था। यह भारत के 30% क्षेत्र पर लागू था। इसमें जमीन का मालिकाना हक गाँव का होता था। गाँव का मुखिया कुल उपज का 60% Tax देता था।

Remark – सबसे कठोर कानून स्थायी बंदोबस्त में था, सर्वाधिक क्षेत्रों पर रैयतवाड़ी लागू थी। जबकि Tax की सर्वाधिक मात्रा महालवाड़ी में था।

Remark – अंग्रेजों ने बंगाल के क्षेत्र में इजारेदारी व्यवस्था लागू की जिसमें अधिक बोली लगाने वाले को जमींदारी दी जाती थी।

भारतीय उद्योग

अंग्रेजी शासन के दौरान भारतीय उद्योग का विकास नहीं हो सका क्योंकि अंग्रेजों ने भारत में पुंजी नहीं लगाई तथा भारतीय माल जो इंग्लैण्ड में जाते थे उस पर अंग्रेजों ने निर्यात कर लगा दिया। जिससे की वे वस्तुएं इंग्लैण्ड में महंगी हो गईं। लखनऊ की छिंट वाले वस्त्र तथा ढाका के मलमल के कपड़ों की मांग इंग्लैण्ड में अधिक थी किन्तु इंग्लैण्ड ने निर्यात कर लगा दिया। इसके विपरित इंग्लैण्ड से आने वाली वस्तुओं पर कोई कर नहीं लगाया जाता था। जिस कारण इंग्लैण्ड के उद्योगों ने भारतीय उद्योग को ध्वस्त कर दिया।

मजदूर संघ

भारत का पहला मजदूर संघ बम्बे मिल हैन्ड एशोसिएशन था। इसकी स्थापना 1884 में लोहखाण्डे ने किया था। 1920 में लालालाजपत राय तथा M.N. जोशी ने All India (AITUC) Trade Union Congress की स्थापना की। आगे चलकर M.N. जोशी इससे अलग हो गए। कालमाक्स ने भारत के विषय में कहा है कि अंग्रेजों ने सुती वस्त्र के घर में सुती वस्त्र का अंबार लगा दिया।

प्रमुख नारा तथा वक्तव्य :

सारे जहाँ से अच्छा — मो० इकबाल
वन्दे मातरम — बंकिम चंद्र
विजयी विश्व — श्यामलाल गुप्ता
वेदों की ओर — दयानंद सरस्वती
जय जगत — विनोबा भावे
संपूर्ण क्रांति — जयप्रकाश नारायण
मेरे शरीर पर परी एक-एक लाठी — लाला लाजपत राय
स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार — बालगंगाधर तिलक
इनकलाब — भगत सिंह
दिल्ली चलो — सुभाष चन्द्र बोस
तुम मुझे खून दो — सुभाष चन्द्र बोस
जय हिन्द — सुभाष चन्द्र बोस
हे राम — महात्मा गाँधी
करो या मरो — महात्मा गाँधी
भारत छोड़ो — महात्मा गाँधी
अराम हराम — जवाहर लाल नेहरू
पूर्ण स्वराज — जवाहर लाल नेहरू
Who Lives In India Die — जवाहर लाल नेहरू

कांग्रेस पर की गई टिप्पणीयाँ :

- (i) डफरिन — कांग्रेस मुट्ठी भर लोगों का संगठन है।
- (ii) कर्जन — कांग्रेस अपने पतन की ओर लड़खड़ा रही है। मेरी इच्छा है कि उसके पतन में मदद करूँ—देश द्रोही संगठन कांग्रेस
- (iii) बंकिम चंद्र चटर्जी — कांग्रेस में लोग पद के भुखे हैं।
- (iv) बाल गंगाधर तिलक — कांग्रेस भिक्षा मांगने वाली संगठन है—वर्षाती मेढ़क की तरह टरटर चिल्लाने से स्वतंत्रता नहीं मिलेगी।
- (v) लाला लाजपत राय — कांग्रेस शिक्षित लोगों का एक मेला है।
- (vi) अश्वनी — कांग्रेस अधिवेशन तीन दिन का एक तमाशा है।
- (vii) विपिन चंद्र पाल — कांग्रेस में लोग केवल याचना (विनती) करते हैं।
- (viii) फिरोज शाह मेहता — कांग्रेस की आवाज पुरी जनता की आवाज नहीं है।
- (ix) महात्मा गाँधी — मैं एक मुट्ठी बालु से कांग्रेस से भी बड़ा संगठन बना सकता हूँ। — स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस पार्टी को समाप्त कर देनी चाहिए।

